IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

डी. एम. सावित्री की कहानियाँ : एक समीक्षात्मक मूल्यांकन

शोधार्थी सुधीर ओझा
एम.ए. हिन्दी (नेट)
स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग
जीवाजी विष्वविद्यालय ग्वालियर, मध्यप्रदेष

षोध प्रपत्र

किसी भी साहित्यकार के कृतित्व का समीक्षात्मक आकलन किये बिना उसके अवदान का मूल्यांकन नहीं किया जा सकता। डी. एम. सावित्री की कहानियाँ नारी अस्मिता एवं बाल श्रमिक संरक्षण को लेकर हिंदी जगत में काफी चर्चित रही हैं। नारी विमर्श केंद्रित उनकी कथा कृति 'खामोशी' सन् 2001 में साहित्य कला परिषद पोर्टब्लेयर (अंडमान) द्वारा प्रकाशित की गई थी। बाल एवं किशोरों की मनोवैज्ञानिक समस्याओं पर आधारित उनका कहानी संग्रह 'आँगन के फूल' सन् 2014 में ग्वालियर साहित्य अकादमी द्वारा प्रकाशित किया गया।

"समकालीन हिंदी कहानी अपनी लंबी विकास यात्रा के दौरान कई पड़ावों से गुजरी है। इस पूरे दौर में बालकों, किशोरों तथा वयसंधि पर खड़े तरूण–तरूणियों एवं अवयस्क युवाओं के लिये उनके जीवन, मनोविज्ञान तथा व्यक्तित्व विकास के लिये लिखी गई उपादेय कहानियों का लगभग अकाल सा रहा है।"[1] नारी, बाल श्रमिक एवं निर्धन जन के शोषण के विरुद्ध क़लम की धार को और तेज करते हुए वंचित और बेसहारा नागरिकों के भविष्य के लिये संवेदना के धरातल पर जुझारू और ईमानदार अनुभूति की सृजनात्मक अभिव्यक्ति की अनवरत आवश्यकता आज कहानी लेखन के समक्ष एक बड़ी चुनौती बनकर खड़ी है। डी. एम. सावित्री ने अपने लेखन के माध्यम से इन चुनौतियों का समाधानपरक उत्तर दिया है। समाज के दर्द और विसंगतियों का सूक्ष्म अवलोकन, गहरी अनुभूति, विचार मंथन, संवेदनात्मक प्रतिक्रिया, सृजनात्मक पहल, शिल्प–सौन्दर्य एवं भाषा की शक्ति के बिना सौद्देष्य, सार्थक और सच्ची कहानी नहीं लिखी जा सकती। जनता की भाषा में जनमूल्यों की रक्षा के लिये डी. एम. सावित्री की कहानियों में जन आकांक्षाओं की सशक्त अभिव्यक्ति मिलती है। डी. एम. सावित्री अपनी कहानियों में धरती

पर संपूर्ण मानवता के सुखी जीवन का स्वप्न देखती हैं। अमानवीयकरण के इस दौर में सावित्री ने एक सजग कहानीकार के रूप में सामाजिक विद्रूपताओं एवं आर्थिक विषमताओं के विरुद्ध अपनी आवाज बुलंद की है। उनके अनुसार साहित्य जीवन की समग्र स्वीकृति है। अतः समाज से अटूट रिश्ता कायम किये बिना संवेदना के धरातल पर युगीन सच्चाईयों पर आधारित कालजयी कहानियाँ नहीं लिखी जा सकतीं।

"कहानी कहना एक कला है। कहने को बहुत कुछ हो, लेकिन कहने का हुनर न हो, तो कहानी नहीं कहीं जा सकती। कथ्य को कला से जोड़ें, तो कहानी बनती है।"[2]

अंडमान द्वीप की तेलुगू भाशी हिंदी कथा लेखिका डी. एम. सावित्री की कहानियाँ विष्व के लिये एक नई सुबह का संदेश लेकर आई है।

"कहानियों के माध्यम से सावित्री ने सामंती अवधारणाओं से उपजी पितृ सत्तात्मक अहंकारी समाज की षोशक सत्ता का ध्वंस किया है और नारी समाज को शक्ति दी है। अभावों के तपते रेगिस्तान में जलते पैरों का अनुभव और विवषताओं के धुंधले आकाश में अश्रुजल की शीतल वर्षा से मिली शांति इन कहानियों के पृश्ठों पर अंकित है।"[3]

"कहानी संग्रह 'खामोशी' की कहानियाँ नारी के जीवन संघर्ष पर केंद्रित नारी विमर्ष की कहानियाँ है, जिनमें नारी जीवन की पीड़ा और उसके संघर्ष को हृदय को स्पंदित कर देने एवं आत्मा को झकझोर देने वाली भाषा में चित्रित किया गया है। सदियों से नारी अपने घर, परिवार, समाज, देश–प्रदेश, दुनिया में उपेक्षित रही है। कहीं ज्यादा तो कहीं कम, उपेक्षा की मात्रा में भले अंतर हो, किंतु उपेक्षा की षिकार नारी कल भी थी, और आज भी है।"[4]

21वीं सदी के इस पूर्वाद्ध में आज भी भारतीय नारी के अस्तित्व पर संकट है। यद्यपि नारी आज माँ, बहन, बेटी, गुरु, श्रमिक, शिक्षिका, कलाकार, सेविका, सैनिक, राजनीतिज्ञ, चिंतक, लेखिका, उद्यमी, प्रबंधक, सन्यासिन, वैज्ञानिक, प्रशासक, मंत्री, प्रधानमंत्री, मनोवैज्ञानिक, राज्यपाल, अंतरिक्ष यात्री आदि अनेक रूपों में अपनी भूमिका का सफल निर्वाह कर रही है। फिर भी भारतीय समाज में पुरुष अपनी सामंती मानसिकता और सोच से मुक्त नहीं हुआ है। नारी को दोयम दर्जे का नागरिक मानकर पुरुष वर्चस्व वाले हमारे भारतीय समाज में आज भी नारी शोषण का शिकार है। उस पर होने वाले अत्याचार और अमानवीय व्यवहार की कहानियाँ आये दिन अखबार की सुर्खियाँ बनती हैं। नारी की इस बेबषी और खामोशी को अपनी कहानियों में बाँधने का साहस दिखाया है, अंडमान की तेलुगू भाशी हिंदी कथाकार डी. एम. सावित्री ने। 'खामोशी' कथा संग्रह की अधिकांश कहानियाँ नारी जीवन की निरीहता, विवषता, त्याग, संघर्ष और उत्सर्ग का कुशल चित्रांकन करती है। पुरुष प्रधान भारतीय समाज में नारी अपनी अस्मिता के लिए आज भी संघर्षरत है। पुरुष प्रधान समाज में सामाजिक मूल्य मर्यादाओं के संरक्षण और समाज की प्रगति में नारी के योगदान को भुलाया नहीं जा सकता। मातृशक्ति सदा ही धरती पर पुरुष के प्रति ममतामयी रहकर लोककल्याण में कार्यरत रही है।

"रूढ़िवाद और सामंती सोच से जूझती नारी ने मनोवैज्ञानिक एवं यथार्थ के धरातल पर हमेशा ही पुरुष की शक्ति बनकर उसे संबल प्रदान किया है। पारिवारिक, सामाजिक एवं राष्ट्रीय स्तर पर नारी का संतुलित एवं सम्यक दृष्टिकोण उसे सांस्कृतिक स्तर पर सम्मानित दर्जा दिलाता है। प्रेम, सत्य, दया, करुणा और मानवीय संवेदना की रक्षा नारी के ही सुप्रयासों का शुभ प्रतिफल है।"[5] भारतीय समाज में नारी के प्रति पुरुष के दृष्टिकोण में परिवर्तन आज के युग–समय की प्रमुख आवश्यकता है। नारी चाहती है कि उसे समान स्तर पर उसकी वास्तविक क्षमताओं का मूल्यांकन करते हुए समाज में उसकी पहचान दी जाए। सावित्री की कहानियों में पात्रों एवं चरित्रों को प्रधानता देकर यही दर्शाने की कोशिश की गई है कि नारी को उसकी समग्रता, संपूर्णता और व्यापकता में परखकर अपेक्षित मान्यता एवं स्वीकृति प्रदान की जाये।

'खामोशी' संग्रह की कहानियाँ 'संतान की खातिर', 'थपेड़ों पर मोर्चा' में नारी की कर्मठता एवं एक जिम्मेदार नागरिक होने का प्रमाण मिलता है। 'लोग क्या कहेंगे', 'दुविधा', 'खामोशी' और 'लुप्त पहचान' शीर्षक कहानियों में भी नारी अपनी सहनशक्ति, त्याग, समर्पण, स्नेह और कर्तव्यपरायणता के गुणों के साथ पूरी जिंदगी अपने आत्मसम्मान और अपनी विलुप्त होती पहचान को बनाये रखने का संघर्ष करती दिखाई देती है। 'और फिर वह लौट आई' षीर्शक कहानी किसी जुर्म में काले पानी की सजा भुगत रहे दो कैदियों पुन्नो और मनु की कथा है, जिनकी मुलाकात जेल में ही हुई थी और जेल से छूटने के बाद वे दोनों शादी करके अंडमान में ही अपनी गृहस्थी बसा लेते हैं। अंडमान में ऊँच–नीच, छुआछूत कुछ नहीं चलता। वहाँ सभी धर्म समान है। एक अलग ही लोकतांत्रिक लघु–भारत वहाँ विकसित हुआ है।

'आँगन के फूल' डी. एम. सावित्री की चर्चित बाल कहानियों का संग्रह है। सत्य घटनाओं पर आधारित ये बाल कथाएं यथार्थ का दर्पण हैं। *"सावित्री ने इन कहानियों में धरती की पीड़ा को सहेजा है। इंसान तो इंसान भूमि पर पनपने वाले पेड़–पौधों की पत्तियों, पुष्पों और टहनियों तक की पीड़ा को कथा लेखिका ने अपनी संवेदना का हिस्सा बनाया है।"*[6] संग्रह की कहानी 'जिजीविशा' बाल मजदूरी को प्रतिबंधित करने वाले कानून का बेसहारा माता–पिता के भरण पोषण पर पड़ने वाले प्रभाव की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट करती है। बाल श्रमिक की शिक्षा के प्रबंध का जब कोई विकल्प इस व्यवस्था में न हो तब इस कानून पर प्रश्न चिन्ह लगना स्वाभाविक है।

'अपना घर', 'आशा की किरण', 'जिज्ञासा', 'अमृतकुण्ड', 'चंपा के फूल', 'लगाव', 'द्वन्द्व', 'मुक्ति', 'स्पर्श', 'सुझाव', 'प्रेरणा', 'दुर्घटना', 'इम्तिहान', 'सेवा निकेतन' आदि बाल कहानियाँ बालक–बालिकाओं एवं किशोर–किशोरियों के जीवंत अनुभवों पर आधारित कहानियाँ हैं। इन कहानियों में बच्चों के निर्मल हृदय और मनोविज्ञान का प्रतिबिंब मिलता है। किस तरह देश के उज्जवल भविष्य के लिये तैयार होने वाली भावी पीढ़ी अपने अधिकार और कर्तव्य से वंचित हो जाती है या फिर किस तरह बच्चों में परस्पर प्रेम, मैत्री, त्याग और भेदभावों से ऊपर उठकर मानवतावादी दृष्टिकोण विकसित होता है, यही कथ्य इन

कहानियों में निहित संदेश है। बाल–हृदय में जिज्ञासा, कुछ नया करने की ललक, अपनी मिट्टी से प्यार, अनाथ बच्चों के प्रति सहानुभूति, कामवाली बाई के प्रति मानवीय दृष्टिकोण, बुजुर्गों, दिव्यांगों तथा माता–पिता के प्रति सेवा का भाव आदि संस्कारों के बीज बोने वाली ये बाल कहानियाँ सरल भाषा में अत्यंत रोचक एवं प्रेरणादायक कहानियाँ है।

देश के मुख्य भूगोल से दूर अंडमान निकोबार द्वीप समूह में हिंदी में निरंतर लेखन करते हुए राष्ट्रीय एकता एवं राष्ट्रभाषा के विकास के क्षेत्र में श्रीमती डी. एम. सावित्री ने ऐतिहासिक महत्व का काम किया है। सावित्री ने कहानी एवं कविता विधा में लेखन के माध्यम से अंडमान द्वीप के जनजीवन की पीड़ा तथा आशा आकांक्षाओं को वाणी दी है और काव्य एवं कथा के साथ–साथ हिंदी की प्रगति और विकास को नये आयाम दिये हैं।

"विगत लगभग तीन दषकों से लगातार हिंदी रचना कर्म को अपनी पहचान बना चुकी तेलुगू भाषी रचनाकार श्रीमती सावित्री ने अनेक भारतीय भाषाओं एवं साहित्य के बीच आपसी संवाद की संस्कृति सुपोषित करने में भी अपना पूर्ण योगदान दिया है।"[7]

सन्दर्भ सूची

1 उत्तरार्द्ध–अक्टूबर 1982 सं. सव्यसाची

2 दैनिक नई दुनिया (साहित्य परिषिश्ट) 21 जनवरी 2008, सं. राकेष पाठक

3 लोक मंगल पत्रिका (त्रैमासिकी), अक्टू–दिसंबर–2009, सं भगवानस्वरूप चैतन्य

4 दैनिक नवभारत, फरवरी 2006, सं डॉ. सुरेष सम्राट, पृश्ठ–19

5 उद्भावना–जनवरी 1996, सं. अजेय कुमार, पृश्ठ–39

6 पृथ्वी और पर्यावरण– जुलाई–सितंबर–2023, सं. ओम प्रकाष सक्सेना, पृश्ठ–11

7 हिन्दी सेवी सम्मान योजना, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, बुलैटिन, पृश्ठ–13